

११०

मिहिरा १

११०

११०

११०

११०

चन्द्रनादिजलपात्रमूर्ध्वनिक्षया॥ उं नमः॥ १५० ॥ मत्स्यमन्त्राय नमः॥ १५१ ॥

ॐ नमो भूक्ति कारये ॥ जलसाधनं ॥ उं अद्भुतं वरूणा देवगी र्वं नमो सिधे
॥ उं ज्ञां आत्मन त्वाय स्वाहा ॥ उं ज्ञां विद्याय त्वाय स्वाहा ॥ उं ज्ञां निव
त त्वाय स्वाहा ॥ ॥ उं सूर्यो र्घयाय ॥ ॥ उं ज्ञां देवो र्घ्या देवो कलमा
रुं रुं र्ववाय यका गग किं सुहिताय रुं दम र्घ्यं गृह्णां स्वाहा ॥
॥ ॥ केतन ॥ ॥ उं अज्जितं सर्वं कर्मा देवो कलमारुं रुं र्ववाय नमो
महा २

युका गग किं वरु किं सुकिं रुं यदे ॥ ॥ मधुलया दाव स्वानग ॥ ॥ गृह
नमकारं ॥ ॥ उं अग्ने नूपाद के स्वानमवायु ॥ उं अग्ने रुं मधु ला
को नः वा र्कं यन च न च न ॥ तत्पदं द गिरं यन गग्ने शी यु नू वन म
यायु ॥ ॥ के नं दाव जा वा वरु य ॥ ॥ आसनं ॥ वलियार्ग तय ॥ ॥
उं अयमासन यायु ॥ ॥ अर्ध यो ग्यात ॥ उं अयमासन यायु ॥ ॥ धव
गं ॥ ॥ उं अकू मासन यायु ॥ ॥ के स्वान काया वज्र वरु वति न्ने विः

यामिह दशायनमः पूर्य ॥ धर्मसाधन ॥ ॥ धनर्गखपूजा ॥ ॥ धन
 दयः ॥ धर्मसाधन ॥ ॥ धनखवसदानः ॥ याकः ॥ यावः ॥ स्नानः ॥ गयाः ॥ वेद्यः ॥
 रुद्र ॥ लखनः ॥ हाय ॥ रुद्र ॥ दाय ॥ रुद्र ॥ अष्टः ॥ नयाय ॥ वीरः ॥ साय ॥
 नमः ॥ लखनः ॥ हाय ॥ रुद्र ॥ दाय ॥ रुद्र ॥ अष्टः ॥ नयाय ॥ वीरः ॥ साय ॥
 यादः ॥ धर्म ॥ साय ॥ रुद्र ॥ दाय ॥ रुद्र ॥ अष्टः ॥ नयाय ॥ वीरः ॥ साय ॥
 वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥ वीरः ॥

कोकुकेकोकुं ४ सुभाकृष्णाय विभायय नमृतं शिवय २ स्वाहा ॥ १२ ॥ जंज
 उं सुभाकृष्णाय विभायय नमृतं शिवय २ स्वाहा ॥ १० ॥ नम
 मत्रयनं वक्रसूक्तसूक्तमयध्वकचाहवां वक्ररुह्यानेनतनाज्यामहं ।
 सूर्यमल्लसद्वनवक्रुष्टनयसंस्तिनं नुमावीजमथयवीशुकधायविमो
 मूयगां । यवाधाययवावीजं यवानन्दमजं जदिनत्रसगननयवीवक्ररुह्या
 यवाहगि ॥ ३ ॥ उं नमृगानमृगान्द्रव्यनमृगवमि विमहायकाधायुर्कद्रुद्र

मनुजप्रपञ्च ॥ वः ॥ धनमृदाकं दावन्मृतयाय ॥ कुंः ॥ यानिमृदाकं न ॥
ॐ स्वर्गपात्रपूजा ॥ ॥ गगनशृङ्गशुद्धिः ॥ ककुपमृदाकं दावन्मृतयाय ॥
योः ककुपुलनीधनयन ॥ नैः शुद्धिः ॥ श्री नारा ॥ श्री द्वाद ॥ कुं ककु ॥ श्री ल
ला ॥ ललाटसंघातचन्द्रामृतालय कावपश्चरुगमि चरयासावना
यादावकुपुललिनीकागं रुय ॥ कुं ककु ॥ कुं द्वाद ॥ श्री नारा ॥ श्री शुद्धिः
॥ नैः आधर ॥ श्री धनसंत ॥ अर्घ्यपात्रपात्र ॥ दवानथमरुय ॥ कुं ककु

गगुद्धिः ॥ ॥ धमदवतादूयतात्रवावन्मृतापूजायाय ॥ नैः वः
नैः पात्र ॥ श्री अर्कगं पात्र ॥ श्री सिद्धि नैः पात्र ॥ कुं भारुनी पात्र ॥ कुं पूर्यः
पात्र ॥ ॐ स्वात्मपूजा ॥ ॥ धमगिरिमगुर्नैः नयाय ॥ नैः साहा श्री
यत्रमगुर्नैः नयाय मि नमः ॥ नैः साहा श्री यत्रापत्रगुर्नैः नयाय मि नमः
॥ नैः साहा श्री यत्रमैः नयाय मि नमः ॥ नैः साहा श्री दिव्ये घगु

५
येक निष्ठाया वोषट्पायू॥ नुं३ डुं कननय वृष्ठाया अस्माय रुट्पायू॥
यू॥ ॥ नुं३ दूँ दद्याय नमः॥ यायू॥ ॥ नुं३ दूँ निरसस्वाहा यायू॥ ॥ ६
नुं३ लें निवाये वषट्पायू॥ ॥ नुं३ नें कवचाय हूं पायू॥ ॥ नुं३ यें भग्नयाय
वोषट्पायू॥ ॥ नुं३ डुं अस्माय रुट्पायू॥ ॥ ॥ नुं३ हें निखाया यायू॥ ॥
नुं३ सें निरस्मान यायू॥ ॥ नुं३ कें ललग यायू॥ ॥ नुं३ में वकं यायू॥ ॥ नुं३ लें दद

य पायू॥ ॥ नुं३ वें नाशो यायू॥ ॥ नुं३ रें शुक्र यायू॥ ॥ नुं३ यें जानो यायू॥ ॥
नुं३ डुं पादद्वयो यायू॥ ॥ ॥ निनवात्मान्मास ॥ ॥ ॥ असनतय ॥ नुं३ यद्मास
न यायू॥ ॥ नुं३ शवासन यायू॥ ॥ धन आसन ॥ ॥ धन आसनतय ॥ नुं३ यद्
मासन शवसु दभवे कुं शिलाचनं । खवर्धुं महादी र्कं सर्वतद्वासयुतं
। खवर्धुं पूर्ववक्तुं रुदकिं । वक्तुं । शिरिं । उक्तुं । वीतवर्धुं । सारुद्वनः

कनकदन्ति (१७) ला ३

कनकदन्ति। न कस्यदपि लघुमंस्त्रं मूलमवच। न दूद्वयीगव बुधु यीतस्य
दन्ति (६) मिता। न कस्य मूलमि ग्याद्रु न दूद्व (७) वग मूलमं। जर्मो दग बुजं दव
कव न्नाहाल (६) मिता। ख प्ररुट धनं दव गि गूल मद्रु गन धा। सुगुं क मद्रु
लुं (७) वृं जम न्नाहाल मवच। वाव धनं दसं यु कं दव बु ध धा सु (६) मिता।
चक्र धे वग वापा धि वन दारा य रु रु कं। का द्य वि न्दू ध नं दव नो नाल काः

न (६) मिता। शर्वयी गं रा व द्धुः मा स न सुख सं सिद्ध। च व नू यं न वात्मानं
मधुलं गुग्म धुनं आय ग न न यु का त्मा कि यं सिद्ध नि मान वा शा धन
पूष्यं नम श्रवा यु गानं ज्ञान वात्मानं शुं हा ग द्धु २ ०० रु ति ध २ ०० रु स नि दि
ति रु व २ ०० रु स नि रु द्ध रु व २ ०० रु व गु ध न म म यु गानं हा व स्वा हा ॥
नं ग हं रु सं र पा या धा धा व म नी य ॥ स्नान ॥ च दन ॥ सिद्ध ॥ ज्ज क्त ॥

नञ् द्या नञ् द्या नमः विष्णुं किं किं विविधं पापू ॥ ॐ देवलिं
॥ ॐ मिश्रतात्मा च न ॥ ॥ गंगा गुरुय किं पूजा ॥ ॐ यद्वा स नवापू ॥
॥ ॐ ॐ श्री गुरुय किं रघु नकाय पापू ॥ ॐ देवलिं ॥ ॐ नमः
दर्शय ॥ ॐ मिश्रतात्मा च न ॥ ॥ गंगा डावाधी पूजन ॥ ॐ
ॐ वास पूनवापू ॥ ॐ सै हं हं मं लं वं नं यी श्री डावाधी कमलानिका

यथापूज॥ रुद्रवर्ति॥ कायमूडाकन॥ रुतिआवधीर्जन॥ ॥ गित४
 श्रीकृष्णपूजा॥ वृंशवृषासनयापूज॥ वृंशसिंहासनयापूज॥ वृंशपुष्प
 आनदा॥ गकिरेनवानन्दवीगाधियनयंमूर्ति॥ श्रीकृष्णनाथस्वामी
 गकिसहिगाययापूज॥ ३॥ रुद्रवर्ति॥ विष्णुदेवलयानिमूडाकन॥
 रुतिश्रीकृष्णनाथार्चन॥ ॥ अथमाष्टकं॥ कापूजा॥ वृंशदसास

नपायू ॥ त्रं अद्या न अमा धवनद विमल अं श्रीवक्त्रा ही विष्टया पू ॥
रुदं वलिं ॥ त्रं गजवास नपायू ॥ त्रं अद्या न अमा धवनद विमल कं श्री
माहि मत्री विष्टया पू ॥ रुदं वलिं ॥ त्रं मयूनासन पायू ॥ त्रं अद्या
न अमा धवनद विमल वं श्रीको मात्रिका विष्टया पू ॥ वलिं विम ॥ त्रं
गजवास नपायू ॥ त्रं अद्या न अमा धवनद विमल ८ श्री वक्त्रा ही वि

ष्टया पू ॥ रुदं वलिं ॥ त्रं मदिवास नपायू ॥ त्रं अद्या न अमा ध
वनद विमल १ श्रीवा ना ही विष्टया पू ॥ वलिं ॥ त्रं गजवास नपायू
॥ त्रं अद्या न अमा धवनद विमल २ श्री वक्त्रा ही विष्टया पू ॥ वलिं
॥ त्रं नरासन पायू ॥ त्रं अद्या न अमा धवनद विमल ३ श्री चामू
ष्टया पू ॥ रुदं वलिं ॥ त्रं सिंहासन पायू ॥ त्रं अद्या न अः

भाधुवनदविमलै ॥ श्रीमहालक्ष्मीविष्णुपायूज ॥ बलिविष्णु ॥ खलुस ॥
नैमिषीवृक्षाध्यादिमातृकायैपायूज ॥ ॐ देवलि ॥ ॥ मृदाकन ॥
पद्ममृदा ॥ गिष्णु ॥ नकि ॥ नख ॥ काल ॥ चक्र ॥ काश ॥ नैपद्म ॥ डी
धने ॥ मृदा ॥ श्रीचक्रमृदा ॥ धूम्रयानि ॥ धूम्रकाश ॥ खलुमृदादर्श
य ॥ ॐ गिष्णुध्यादि ॥ ॥ नितः उग्रचक्रादिपूजा ॥ नैमिषासन

पायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥
नपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥
ॐ उग्रचक्रादिपूजा ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥
पाइकापूजयामि ॥ बलि ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥
महामाया ॥ ॐ देवतापायूज ॥ बलि ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥ नैमिषासनपायूज ॥

मम भुलाय पायू ॥ नैजं सा मम भुला धियग यं ॐ नव वृत्तासन पायू ॥
नैजं किम भुलाय पायू ॥ नैजं किम भुला धियग यं सदा निव वृत्तासन पायू ॥
पायू ॥ नैजं गवासन पायू ॥ नैजं वृत्तासन पायू ॥ नैजं सिंहासन पायू ॥ नैजं व
क्रासन पायू ॥ नैजं स्वाहासन पायू ॥ ध्यान ॥ ॥ नैजं नीलं यश्च नानं
त्यन द्वय यो द्वै स्मि तः ॥ दिन दृव वर्यं नीयौ नत्न स्यो हि च विग ४

शिवाहा ३३

॥ वद्विना रिक्ता गी गुच्छ किं न वं ॥ कद्य न ताग व्या द्यां शु कौ रिक्ता ॥
सुहासा वा ॥ विशु कूल चक्र धजा दानं च दक्ष वा दूरि ॥ पालिजागं
जायमा ली सै ॥ सुका राय कं कर ॥ अ न्य द्वा द्वा यो र्था च क र म्मा व
त विग्रह ॥ द वा सै न ग्म नाने च स द व स स्मि नान व ॥ ॥ नैजं नीली
जन समप्रख्या कृ दि न्वा म हा द न ॥ व द्वा द्वा द ग र्हा स यो मि

३३३

चत्तचर्चिता ॥ मधुमाला धनी श्री दी दंष्ट्रा कपाल कानना ॥ अष्टादश
 म्बका देवी वर्व गार्ह निशो रहा ॥ आद्युच म्म यनी ना मिंदुच म्म रुनी
 यका ॥ दिव्यारु न हसूषा द्वा अष्टादश हसिनी ॥ न स्याः पी गंडलं
 वकु म्म रुनं म्म म्म निरं ॥ दक्षि (दक्षि वृव शु अ यत्सं म्म म्म प्रद गिर्न ॥ प्र
 व्व वकु र व ड क म्म म्म न ह रि काय म्म ॥ सहस्र सूर्य स काग म्म वकु

यत्रा चितं ॥ सव्वा डंष्ट्रा कला को निव कु न्य कानि गं रुना ॥ अस्मान्यः
 स्याः प्रव कामि कृ द्वि कायाम ह किच ॥ दक्षि (दक्षि वृव शु अ यत्सं म्म म्म प्रद गिर्न ॥ प्र
 व्व वकु र व ड क म्म म्म न ह रि काय म्म ॥ सहस्र सूर्य स काग म्म वकु
 वाम गेद द्या लीला त्य ल स गान कं ॥ अन्य च म्म रुव द्वा अ यत्सं म्म म्म प्रद गिर्न ॥ प्र
 व्व वकु र व ड क म्म म्म न ह रि काय म्म ॥ सहस्र सूर्य स काग म्म वकु

शक्ति कुममिव न किर हा न काय आन पू र्थी नमः वायू १ ॥ ॐ ति
 आन विरिं र्य ॥ ॥ नै १ कुमद व द व नी न ॐ हा ग च्छ ॥ ॐ हा ग च्छः
 १ ॐ हा मि द न २ ॐ हा सु त्रि दि ना रु व न २ ॐ ह स वि प्र द्वा ए व न २ म म
 पू र्णा ग्हा हा घ स्वा हा ॥ ह्रि ज् व गु ष्ठ घ ॥ नै १ ह्रि २ सै २ कुमद व द व नी
 र्थी च न त्या र्थी नमः १ या पू १ ॥ थ थ म न वा १ घे १ स्वा हा पा पू ॥ ॐ दं मा

यमनीयं स्वधायक ॥ ॐ दं स्नानीयं नमः ॥ यायू ॥ ॐ वगन्धानमः ॥ ॐ
 दं चन्दनं नमः ॥ यायू ॥ ॐ दं मङ्गलं नमः ॥ यायू ॥ ॐ दं मिन्दुर्नमः ॥ यायू
 ॥ ॐ नत्पुष्पं वीषट् यायू ॥ धर्तस्नान विधि ॥ ॥ श्रीं जलिधन ॥
 जैर्गहसंक्षमलवन्तयूं आनन्दगकिरे नवानन्दवीयाधिपतयः सह
 क्षमलवन्तयूं श्रीमहाविद्यायाजं स्वर्गोष्पद विनतिक्रमनिवगकि

मलवजगौवक्र मातृरुदादिशीप्रिखधु राष्ट्रिकायशीपायूभाः
देवलिं ॥ प्रिखधुमातृ ॥ ॥ नमामूलकानर्चनपूजा ॥ धनन्यासः
॥ त्रैजं रूद्ररूपेण ॥ जमायरुद्र पायूज ॥ ॥ त्रैजं ज्वायज्जं जं गुहायां
नमः पायूज ॥ त्रैजं ध्यायज्जं नीत्यां स्वाहा पायूज ॥ त्रैजं ध्यायज्जं
नमः पायूज ॥ त्रैजं सर्वगः सर्वसर्वं ज्ञेयं ज्ञेयं

मिकायां ज्ञेयपायूज ॥ त्रैजं ज्ञेयः ॥ कनिष्ठायां वीर्यपायूज ॥ त्रैजं रूद्र
रूपेण ॥ करनयययायां जमायरुद्र पायूज ॥ कन्यायां न्यासः ॥
त्रैजं ज्वायज्जं दयायनमः पायूज ॥ त्रैजं ध्यायज्जं जिज्ञा
सस्वाहा पायूज ॥ त्रैजं ध्यायज्जं नमः पायूज ॥ त्रैजं सर्वगः सर्वसर्वं ज्ञेयं ज्ञेयं
॥ त्रैजं सर्वगः सर्वसर्वं ज्ञेयं कवचाद् पायूज ॥ त्रैजं ज्ञेयः ॥ ज्ञेयं ज्ञेयं

यवोषधपापू॥ नैऋतं रुद्रपापू॥ अस्तम्यरुद्रपापू॥
 मन्त्रासः॥ नैऋतं जललाघ्यापू॥ नैऋतं कठपापू॥ नैऋतं मुख
 पापू॥ नैऋतं वृक्षपापू॥ नैऋतं उपाद्वयपापू॥ ॥ अ
 स्नानाय॥ नैऋतं आभारसक यनमः॥ पापू॥ नैऋतं जनेनास्नायः
 नमः॥ पापू॥ नैऋतं रक्त यनमः॥ पापू॥ नैऋतं नायायनमः॥ पापू॥

लंका न संदुर्ग सर्वलक्षणसंगता । हे गवामन ननु धार्य । अंका न
अंका प्रकीर्तिता । अवं ध्यात्वा देवा नाह । कियु मिदु किमान वा ।
॥ ध्यान पूर्य नमः पापुज ॥ ॥ धन स्याद्वाहनादि ॥ ॥ अंज
कृति कं धन स गवामी के दि के धनी ॥ हा गवाम २ ॥ कुरु मिदु गव
॥ कुरु स विदिगा रवग २ ॥ कुरु स निरु रवग २ ॥ मम पूजा गृहा

१ यश्च महामुखा

स्वाहा पापुज ॥ हं अरु वरु न ॥ ५ ॥ धन स्याम ॥ अंज द्रौ मयौ क
वि कं धन कृति कं धनी स्यात् ॥ त्याज्यं नमः पापुज ॥ ध (ध
अथा ॥ अर्थ ॥ स्वाहा ॥ ॥ दं माव मनीयं व ॥ ॥ दं स्यानीयं
मः ॥ अथ (ध्यानमः ॥ ॥ दं वन्दनं नमः ॥ ॥ दं म कर्तनमः ॥
॥ दं सिद्धं नमः ॥ ॥ अथ पूर्य नमः ॥ ॥ वीषट् पापुज ॥ ॥ श्रीगलि

पूर्वेष्वर्थे नमः॥ वलि ॥ ॥ दक्षिणामाय ॥ वैष्णवामनाथे नमः॥
त्रैलोक्ये श्रीनिगणेश्वर्ये नमः॥ वलि ॥ ॥ उक्तनामाय
॥ धनं कुं गुह्यका विष्णुजा ॥ उक्तस्य श्रीगुह्यकालीया
श्वनमः ॥ लस्यसदानिवसः पिङ्गुगतीकृता दशवक्रा गुह्यका
लीदवना कुं वीजं श्रीगणेशः ॥ कुं कीलका यन्त्रार्थचतुष्टयविः

नियोगः॥ ॥ कुं सदानिवसः यनमः॥ मालसः॥ कुं जगतीकृ-
दसनमः॥ प्रथमः॥ मन्त्रीगुह्यकालीदवनाथे नमः॥ दक्षिण
॥ कुं वीजाय नमः॥ गुह्यसः॥ द्वांशकयनमः॥ यागसः॥ कुं कीलका
यनमः॥ सवोद्वसः॥ कुं मम यन्त्रार्थचतुष्टयविनियोगः॥ हाथ
आयः॥ ॥ म विद्यादिन्यासः॥ ॥ स्वाहा जम्बाय रू ॥ उं कुं जम्बा

थीनमः॥ सिद्धिकलालीगर्जेनीत्यांस्वाद॥ डौं कुं डूं म ध्रुमा
र्यावषट् ॥ मूं डूं अनामिकायां डूं ॥ नमः कनिष्ठायां वी
षट् ॥ स्वाहा करननयपृष्ठायां अमायूरुट् ॥ डूं डूं दयो मन
मः॥ सिद्धिकनालिगिरमस्वाद॥ डौं कुं डूं निषाये वषट् ॥ मूं
डूं कवचापडूं ॥ नमः नणुगयाय वीषट् ॥ स्वाहा अमायूरुट् ॥

॥ आसनतयथन॥ ॥ अष्टविंगतिमूलासनायनमः॥
डूं यः अष्टासनायनमः॥ डूं महारं नवयुगासनायनमः॥
डूं महागिवासनायनमः॥ थनध्यानं ॥ याथादिउषसा नवयु
जा॥ ॥ अयाजलिं ३ ॥ डूं सिद्धिकनालि डौं कुं डूं नमः स्वा
हा श्रीगुक्काली देवी वायु ॥ रं वं यो गे ध्वनिवैलिं गृह्ण २ म
हा ॥ ॥ थनगुक्कालीया ॥ ॥ ॥ मूं २ ॥

क्रीं क्रीं कूं कूं मुं काम कला कालि मुं कूं कूं क्रीं स्वाहा ॥ काम कया
॥ ॥ धन सिद्धि ल ॥ श्री पूजा ॥ न्यास धन ॥ ॐ जय श्री सिद्धि ल ॥
श्री नवाक्षर मन्त्र स्यात् नो यद्दुर्ग विघ्नं यशो रुन् ॥ श्री सिद्धि ल ॥ श्री द
वता श्री बीजं कूं ग किं ॥ हां कीलकं प्रवृषा र्थं चतुर्वक्ष्यमा धनं वि
नियोग ॥ ॥ मानस ॥ उद्गम पथे नमः ॥ ॥ मूथस ॥ जगती रुन्

सनमः ॥ नृगयस ॥ श्री सिद्धि ल ॥ श्री दवता ये नमः ॥ शुद्धम ॥ ॐ
बीजाय नमः ॥ पा ॥ ॐ ग कय नमः ॥ सवोद्गमं ॥ कूं कीलकाय न
मः ॥ हाथ जोलय ॥ चतुर्वर्ग सिद्धये विनियोग ॥ ॥ नमः अस्माय
रु ॥ ॐ श्री अक्षुष्टायां नमः ॥ कूं हां तर्जनीयां स्वाहा ॥ ॐ म अ
मायां वषट् ॥ कूं जनामिकायां हूं ॥ कूं कनिष्ठायां वीषट् ॥

॥ जप्यादि न्यास ३

नमः करुणायुक्ताया अमृताय रुद्र ॥ उं की ह्रदयाय नमः ॥ हूं ह्रीं
 निरुह स्वाहा ॥ उं निखाये वषट् ॥ क्रीं कवचाय हूं ॥ क्रीं नगगुया
 य वी वट् ॥ नमः शुभ्र मुखाय रुद्र ॥ हूं मित्रास ॥ धन आसनं ॥ इं पुन
 सनाय नमः ॥ ह्रीं महारुद्रा सनाय नमः ॥ धन धानं पादादि उय
 वाग ॥ आ ऊ लि ॥ उं की हूं ह्रीं उं क्रीं क्रीं नमः ॥ श्री सिद्धि लक्ष्मी दे

वी पायू ॥ हूं ॥ व वं व लिं ॥ यानि मृदा कन ॥ धन सिद्धि लक्ष्मी या ॥ ॥
 ॥ धन सुन्दरी पूजा ॥ अस्य श्री महागिपुत्र सुन्दरी पञ्चदशम कृती म
 नुस्य दक्षिण मूर्ति म वि ४ यं किं रुद्र ४ श्री महागिपुत्र सुन्दरी द
 वगा क्रीं वीं क्रीं ग किं ४ मू की की न कं म म च तु वं श्री सिद्धय वि नि ४
 पा ग ४ ॥ ४ ॥ धन न्याय सयाय ॥ दक्षिण मूर्ति म व य नमः ॥

मांसा ॥ यं किंच न संनमः ॥ अथ ॥ मूत्रं महां प्रियं वसुधं
नीदवगाये नमः ॥ नृगं नमः ॥ कौं वीजाये नमः ॥ गुणं मूं ॥ कौं गकय
नमः ॥ या ॥ मूं कीलकाय ॥ नमः ॥ मर्वा द्रुमं ॥ वृष ॥ कौं वृजः
सिद्धि य विनिधा ॥ नमः ॥ हाथ ॥ जानय ॥ ॐ निज खादि ॥ न्या सः
॥ ॥ मूं अमुय रू ॥ क ॥ लं कौ अरु वार्या नमः ॥ रुस कहलं कौ

गर्जनी र्यां स्वाहा ॥ मूं मधुमा र्यां वषट् ॥ कौं अना मि कार्या दं ॥ कौं
कनि कार्या वीषट् ॥ मूं कन गनय ॥ र्यां अमुय रू ॥ कौं
हृदयाय नमः ॥ कौं बिंदु रम स्वाहा ॥ मूं गिरवाये वषट् ॥ कौं
कौं कवचाय दं ॥ रुस कहलं कौं न ॥ गुण या य वीषट् ॥ मूं अ
मुय रू ॥ ॐ नि न्या सः ॥ ॥ आसन थन ॥ ॐ कौं कौं

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
देवलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ

वलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
लि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
जयामि ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
वृषासन वायु ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ

महेश्वरवायव्यं श्रीनृसिंहस्त्रीभक्तिसहिनायथीपारकां पूजयामि
नमः३॥ रुद्रं वलिं॥ धर्मदयदवी पूजा॥ नगाली मेखरपू
जनं॥ न्यास॥ सांज् कुष्ठाख्यां नमः॥ कनकन्यास॥ वरुण
स॥ ॐ ह्रीं श्रीं नवकायनमः॥ ॐ ह्रीं पूर्ववकायनमः॥ ॐ ह्रीं द
क्षिवकायनमः॥ ॐ ह्रीं उरुनवकायनमः॥ ॐ ह्रीं पञ्चमवध

हारीमंभवनायवारकां पूजयामि ॥ ॐ दं न व शं वलिं गृह्ण रखाहा ॥
ॐ जं डीं दुं दूँ श्री डो व दी ग किं स हि नाय पायू ॥ ॐ दं व लिं ॥ ॐ श्री मं भव ना
य वि म हं वं व ड द हा य धी म हि । न नो नू द य चा द या ॥ ॐ जं य धि मिं
खि न मूर्क य पायू ॥ ॐ जं जू र्क न मूर्क य पायू ॥ ॐ जं जू र्क न मूर्क य पायू ॥
मूर्क य पायू ॥ ॐ जं न क ल मूर्क य पायू ॥ ॐ जं स रु द व मूर्क य पायू ॥

ॐ कों कों नी मूर्क य पायू ॥ ॐ दं व लिं ॥ ॥ नं न रा स न पायू ॥ ॐ जं हं
र पि भ च ना ध य वा र कां पू ज या मि ॥ ३ ॥ व लिं ॥ ॥ नं न रा स न पायू ॥ ॐ
जं मूं वि भ वि भो पायू ॥ ३ ॥ व लिं ॥ ॥ ध न वे कू वी पू जा ॥ ॐ
गूं पू ज स न पायू ॥ ॐ जं धं जू द्या न अ मा ध व न द वि म ल ॐ
वं वं कू वी वि भ वा र कां पू ज या मि ॥ ॐ दं व लिं ॥ ॥ र ख मू डा क न

॥ उं ह्रूँ व ४ स्व स्वाहा ॥ उं ज्ञं गं धूं क्षं झूं मूं वलिं गृद्र २ स्वाहा ॥
॥ उं ज्ञं समस्तमनुयी ० सिं हा सैन्यी मुं ० यी लययी ० कृं गं
पद्मगुप्तं नो हा वसन्तो रुदिवा सिद्धिं ॥ समयचक्रपाशकां पु
जयामि वलिं गृद्र २ स्वाहा ॥ उं ज्ञं उकां नू कं यं लिखितं
स्मर्वन्तं द्वादशायनमा ४ वलिं गृद्र २ स्वाहा ॥ ॐ गिवलिविय

ध्वग ॥ ॥ चदन ॥ उं ज्ञं ०० दीमलयमं रूगं चन्दनं हीमगिनलं ध
वीनजा कृगविं द्रगङ्गा हाद्योममसिद्धयं ॥ सिन्दूर ॥ उं ज्ञं युक्तवदं
नक्षत्रस्य लं चूर्नं वीजयूषन ॥ गृहाद्यवीजवीजं गीसिन्दूरं लं वं
दायक ॥ यय ॥ उं ज्ञं मा लं नानाविधं चैव वधुं भीत्यनिर्कं गं उं
* जायन्तान्मकद्वीगृहान्द रुलाकये ॥ ॥ धूप ॥ उं ज्ञं वनस्यति

जसात्यनै नानाः पुष्पिर्गं । आश्रयसर्वे दवानां धूपार्थं प्रति
गृह्येतां ॥ १ ॥ देव ॥ नुं श सप्रकासमहादीय सर्वगतिमियाय ह ।
सवाक्राय ननु अग्नि दीया र्थं प्रति गृह्येतां ॥ २ ॥ ने वद्यादि ॥ नुं श
जेन्न शुभिविधये वरसे षष्ठि समस्विर्गं । ममानि वेदि तं तुल्यं गृह्या
दहाय न मे श्वरी ॥ ३ ॥ धने न वै श ॥ ४ ॥ धनदेवत व्यनयाय ॥ नुं श

नंदकुंजकव्यगींशीपाइकीतव्ययामिनमः॥ ॥ उं उं सिद्धिकरा
लिंकींकीं उं मुं उं नमः॥ स्वाहाशीगुं कालीतव्ययामिनमः॥ ३
उं उं उं उं उं उं नमः॥ स्वाहाशीसिद्धिलक्ष्मीतव्ययामिनमः॥
॥ उं उं उं उं उं उं नमः॥ स्वाहाशीमहाप्रियसुन्दरीतव्ययामिनमः
॥ ३॥ निबोद्धुं उं नया ॥ उं उं उं उं सर्वगमः ॥ ३॥

नवायदुं उं उं उं उं शीपाइकीतव्ययामिस्वाहाशीमहा
निबोद्धुं उं उं निबोद्धुं शीपाइकीतव्ययामिनमः॥ ३॥ धनं धनं
॥ पुनरावृत्तमनीर्यस्य ॥ ॥ जययायधन ॥ विदवया ॥
॥ माला ॥ पूजा ॥ उं उं उं उं उं मालाय नमः॥ जययाय ॥ १०८
॥ वनीजिनजय १०॥ ॥ शुद्धकालीयाउज्ज

दनी १०॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मीयाजवनवाहनी १०॥ ॥ पियुगसुन्द
नीयाजवः य शुद्धदशमहनी १०॥ ॥ निर्वानयाजव ॥ कौं मूं १०॥
॥ जगलं याजव ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ मां मीं मुं ३॥
मूं मीं मुं ३॥ ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ मां मीं मुं ३॥
॥ दवदवि याजव ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ मां मीं मुं ३॥

॥ नृसुखनयाजव ॥ उं दूं हूं सं ॥
॥ मां ३॥ मूं ३॥ ॥ मयाजव ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ दा
यदीयावें जव ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ दवदनीयावें जव ॥ दा
॥ मां ३॥ मुं ३॥ ॥ ययाया जव ॥ दां दौं दूं मूं ३॥ ॥ दा
॥ कलेखकायावदवीयाला ॥ रामगसजवसमर्थनयायः
॥ नृजगुकादिगुकागमकी रंगरानासमलुनं जवें सिद्धिरव

पुमदवित्तुसादात्महृदयनी ॥ ॐ नमः ॥ ॥ महलयादावकाशः
याय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ कृति कार्ये ॥ ॐ नमः ॥ अखलममललाकारं ॥ अदोदधु ॥ ॥
उकासावात्रयुयी ॥ विष्टं (अनवर्तुं) ॥ उकासादुत्पदाया ॥ म (अ) ॥
ग्रामास नरु ॥ ख अं वा मनु सिद्धि ॥ ॥ मात्रका ॥ विमण ॥ दशवर्तु
महाधाय ॥ आयदाधुवगायनी ॥ यत्रमानन्दसुन्दर ॥ श्रीसम्पत्तौ श्रीम

गायितन ॥ अयत्राधमरुमाणि ॥ अग्रगन्थादि ॥ अस्मत्त्रित्यकर्म वि (अ)
नत्सर्व्वयलियुर्धुममु ॥ नमस्कारय ॥ ॥ धनगर्धययाय ॥ या
अककुमरुमिकावसगयानादिषुया ॥ संलिताः या ॥ यां काया ॥
नत्रामकयनित्रया ॥ यासस्मिता अगुष ॥ उक्तामामिमत्रुत्तरु
नित्रयानि अस्मत्वासाध्याः सां दव्यानिव दध्यरुहतेरुह
यत्रासुव्यागुकोलाधिगा ॥ ॐ नमः ॥ श्रीनाथाय ॥ ॐ नमः ॥ श्री

सिद्धिनाथाय ॥ नमः ॥ श्री कृष्ण नाथाय ॥ नमः ॥ पाइकी पूज्या
मिनेमः ॥ ॥ देवांगी बोदः ॥ ॥ नमः नका नेकः रुवाणि मूर्तिकपराः
पू (सु) श्वरी वास वेरुत शी गग (स) यमा रुग वेति ने (स) श्वरी दक्षि (स) ॥ ॥
नागं मय कृष्ण श्वरी कुल गद्य वा नृ ध्य दिग्ना य का शी वा मी पुन मा सि वि श्व
जननी द (स) श्वरी सिद्धि दी ॥ ॥ जर्द्ध या गुया ली खन धम हाय ॥ यत
सिन्धु लन नय ॥ स्नान न कु म ॥ आंगी बोद ॥ ॥ नमः जर्म पूर्व गतं य

देरुग व ति शी त न्य नृ या लम का स्ना न नृ व द्रु लात धा रु प्रि रु गो व द्वा म गी द
चि रु य ॥ रु र्वे नृ व व श्व की न न गतं शी या नी य श्व के च नृ व द्वा म गी द
चि ली य द्म म म ली मी या तु नि र्व कृ शा ॥ ॥ द्रु व या (ध) व ति नि न्या म द
या य ॥ नमः नमी रु ग व ति शी द्रु क म ला य द्वा शी जर्द्ध या ली नमः
॥ ॥ ग्या दि क न व कु मी न्या म ॥ ॥ नमः कि नि कि नि वि श्व की द्रु ध

येक ॥ अमुंरुद्राय नमः ॥ कर्तुं ॥ थवदुदयसदवीलीनश्वरात्रये
यानिमद्राकं न ॥ ३॥ नमो रोगवर्गिण्युक्तमलाये ॥ श्रीरुद्रमाय
नमः ॥ ४॥ ॥ लादाय ॥ लाधुत्रके ॥ संहारागमद्रावलि
सद्भाय ॥ ५॥ अमुंरुद्राय नमः ॥ वलिसुलेखगुप्तये ॥ ६॥ वय
मनुर्वनासिय ॥ ७॥ लेखमधुलयाय ॥ ८॥ सुयोमादिधाय ॥ ९॥

॥ कूलमारुतुरेवामयप्रकाशकिं स हि गायकृतकर्मधामनि ॥
॥ १०॥ दमर्च्यं गतानखाहा ॥ ११॥ अत्रिं सर्वकार्योदो ॥ धनं ॥ १२॥
वरायाक ॥ १३॥ कर्तुं हावनमस्तु गमाय ॥ १४॥ ॥ गतिनिस्थाचनयद्वि
समाक ॥ १५॥ ॥ १६॥ मन्त्र ॥ १७॥ माद्यगुद्विअचाय धनकाश ॥ १८॥ वर
निष्कयाशीलक्ष्मी गजगामनगुरु ॥ १९॥

This image shows a page from an old manuscript, featuring a grid of handwritten text in Devanagari script. The page is heavily stained and discolored, with a yellowish-brown background. The text is arranged in a structured layout, likely a table or a list, with multiple columns and rows. The ink is dark, and the paper is aged and yellowed. The grid is formed by dark lines, and the text is written in a clear, legible font. The overall appearance is that of a well-used, historical document.

[illegible]

00000
 11111
 22222
 33333
 44444
 55555
 66666
 77777
 88888
 99999
 00000
 11111
 22222
 33333
 44444
 55555
 66666
 77777
 88888
 99999

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥